Topic-24 हल् संधि - जश्त्व, पर सवर्ण

झलां जशोऽन्ते ।

पदान्ते झलां जशः स्युः। वाग्दिशः।

वास्तव में स्वर-वर्ण, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण अथवा हकार परे होने पर ही यह सूत्र चरितार्थ होता है।

यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ।

यरः पदान्तस्यानुनासिके परेऽनुनासिको वा स्यात्। सन्मुरारिः, सन्मुरारिः

अनुनासिक स्वर और व्यञ्जन - दोनों ही हो सकते हैं, किन्तु पदान्त यर के पश्चात् अनुनासिक स्वर न दिखाई देने से यहाँ अनुनासिक से केवल व्यंजन अनुनासिकों का ही ग्रहण होता है।

इस प्रकार सूत्र का व्यवहारोपयोगी अर्थ होगा - ङकार, ञकार, णकार, नकार या मकार परे होने पर पदान्त कवर्गस्थ, चवर्गस्थ, टवर्गस्थ, तवर्गस्थ और पवर्गस्थ वर्णों के स्थान पर विकल्प से अनुनासिक वर्ण आदेश होता है।

वा० - प्रत्यये भाषायां नित्यम्। तन्मात्रम्। चिन्मयम्

'भाषायाम्' कहने से यह वार्तिक लौकिक संस्कृत में ही प्रवृत्त होता है, वैदिक संस्कृत में नहीं।

इस वार्तिक से भी सूत्रवत् पदान्त यर को ही अनुनासिक होता है, अपदान्त यर को नहीं। यथा स्वप्नः।

वास्तव में यह सूत्र असिद्ध है, अतः जहाँ झलाम् - ० का विषय होगा, वहाँ पहले 'जश्'

तोर्लि ।

तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णः । तल्लयः ।

किङ्गलँ लिखति । नस्यानुनासिको लः ।

यह सूत्र 'झलाम् - ०' की दृष्टि में असिद्ध है, अतः जहाँ 'झलाम् - ०' का विषय हो, वहाँ पहले 'जश्' होकर बाद में प्रकृतसूत्रों से लकार होगा, यथा → 'जगत्+लीयते = 'जगद्+लीयते' = जगल्लीयते ।'